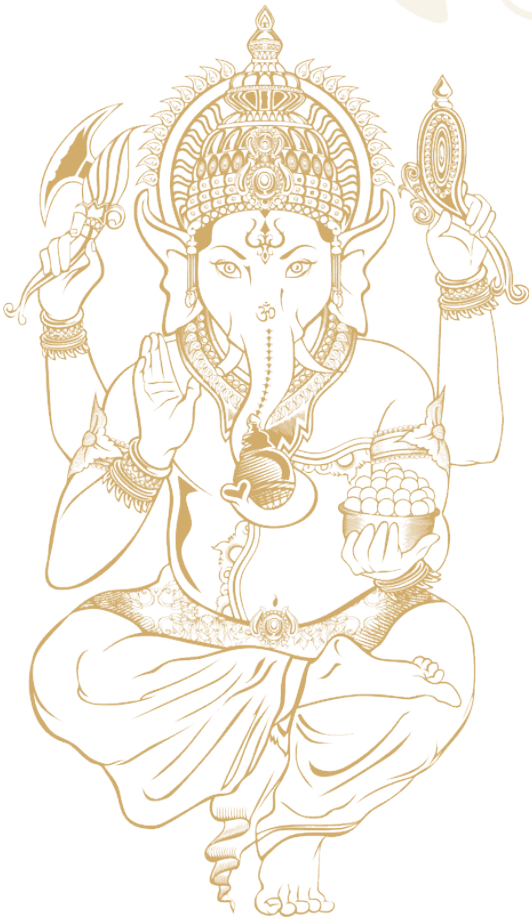

Mr.shashikant M Bamne

06 May 1979

03:45 AM

Mumbai

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120699001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**5-06/05/1979**
दिवस	शनि–रविवार
जन्म समय	**03:45:52 कला**
इष्ट	54:01:19 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	03:07:12 कला
वेलान्तर	00:03:16 कला
साम्पातिक वेल	17:59:57 कला
सूर्योदय	06:09:20 कला
सूर्यास्त	19:01:50 कला
दिनमान	12:52:30 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्याचे अंश	21:15:02 मेष
लग्नाचे अंश	06:24:53 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मीन – गुरु
राशि–स्वामी	**सिंह – रवि**
नक्षत्र–चरण	**मघा – 4**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	ध्रुव
करण	तैतिल
गण	राक्षस
योनि	उंदीर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	उंदीर
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मे–मैसी
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृषभ

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1901	वैशाख	16
पंजाबी	संवत : 2036	वैशाख	23
बंगाली	सन् : 1386	वैशाख	22
तमिल	संवत : 2036	चिटिराई	23
केरल	कोल्लम : 1154	मेदम	23
नेपाली	संवत : 2036	वैशाख	23
चैत्रादी	संवत : 2036	वैशाख	शुक्ल 10
कार्तिकादी	संवत : 2036	वैशाख	शुक्ल 10

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 9
तिथि समाप्ति वेल _____: 25:44:10
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 07:07:10 कला
जन्म योग _____: मघा
सूर्योदय समयी योग _____: वृद्धि
योग समाप्ति वेल _____: 18:51:09 कला
जन्म योग _____: ध्रुव
सूर्योदय समयी करण _____: बालव
करण समाप्ति वेल _____: 12:28:16 कला
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 51:36:43
भभोग _____: 67:37:09
भोग्य दशा वेल _____: केतु 1 वर्ष 7 मा 28 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मांजर
लग्न _____: मीन
रवि _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगळ _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

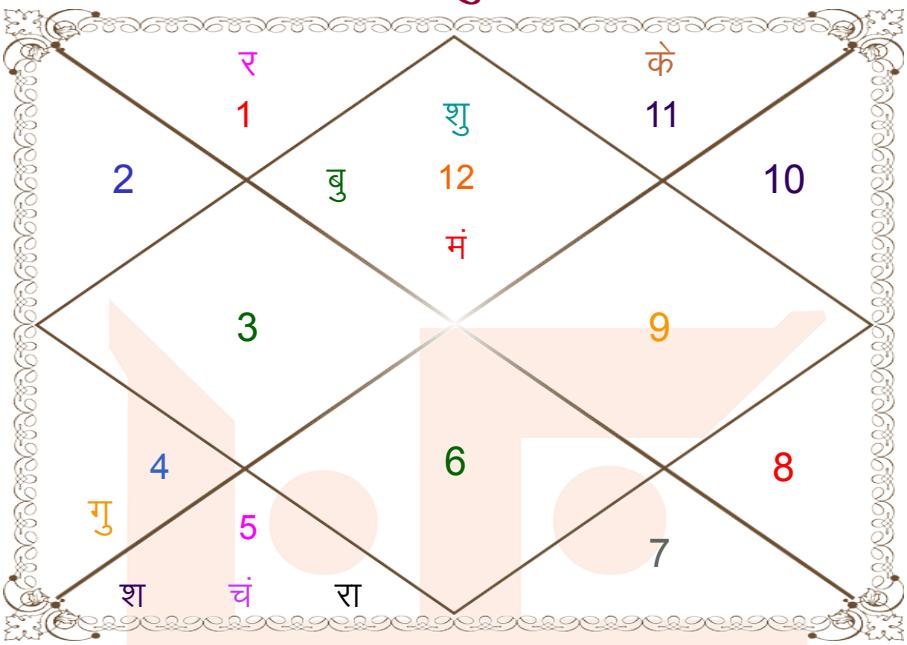

चन्द्र कुंडली

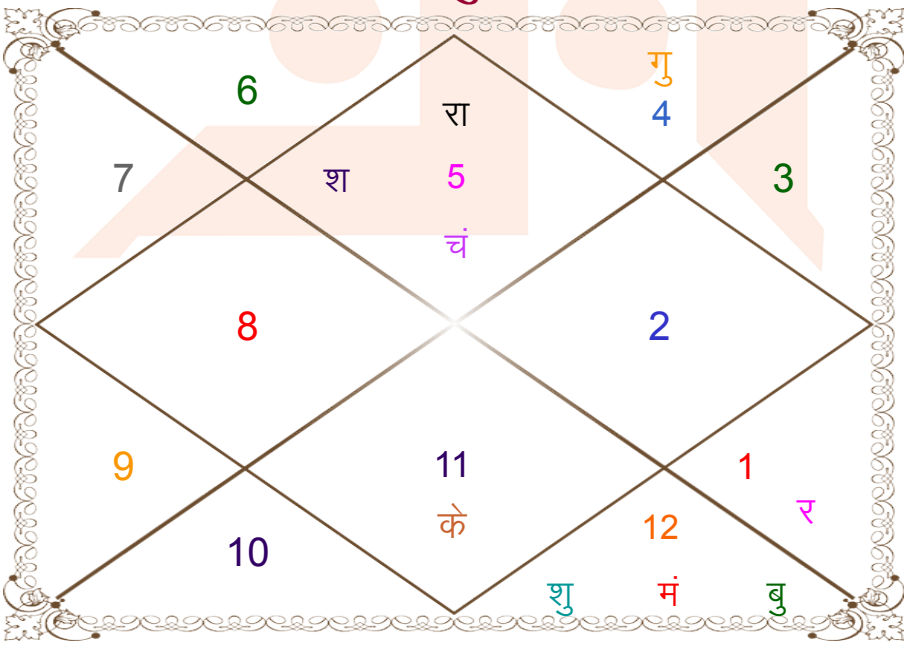

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

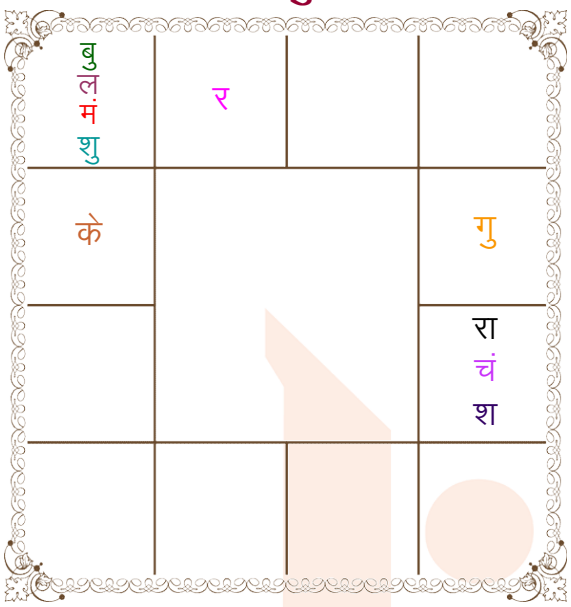

लग्न कुंडली

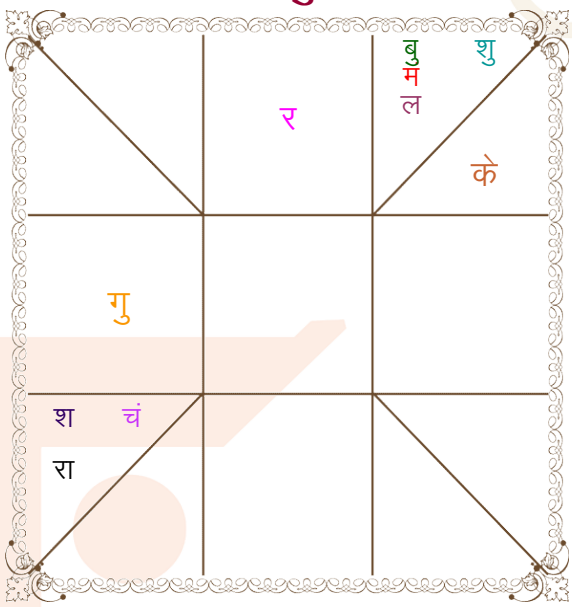

विंशोत्तरी

केतु 1वर्ष 7मा 28दि

केतु

06/05/1979

02/01/2094

केतु	01/01/1981
शुक्र	01/01/2001
रवि	02/01/2007
चन्द्र	01/01/2017
मंगळ	02/01/2024
राहु	02/01/2042
गुरु	02/01/2058
शनि	01/01/2077
बुध	02/01/2094

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 2मा 7दि

सिद्धा

12/07/2022

12/07/2029

सिद्धा	22/11/2023
संकटा	12/06/2025
मंगळा	22/08/2025
पिंगला	11/01/2026
धान्या	12/08/2026
भ्रामरी	23/05/2027
भद्रिका	12/05/2028
उल्का	12/07/2029

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	06:24:53	462:20:32	उ.भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	–––
सूर्य			मेष	21:15:02	00:58:06	भरणी	3	2	मंगळ	शुक्र	गुरु	उच्च राशि
चंद्र			सिंह	10:10:11	11:50:48	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
मंगळ			मीन	28:40:37	00:45:37	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	मित्र राशि
बुध			मीन	28:20:59	01:32:14	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	नीच राशि
गुरु			कर्क	07:56:16	00:06:56	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	उच्च राशि
शुक्र			मीन	21:49:06	01:12:26	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	उच्च राशि
शनि	व		सिंह	13:31:15	00:00:23	पू.फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
राहु			सिंह	22:11:40	00:00:44	पू.फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
केतु			कुंभ	22:11:40	00:00:44	पू.भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		तुला	25:36:06	00:02:31	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	–––
नेप	व		वृश्चि	26:26:37	00:01:15	ज्येष्ठा	3	18	मंगळ	बुध	गुरु	–––
प्लूटो	व		कन्या	23:32:37	00:01:26	चित्रा	1	14	बुध	मंगळ	मंगळ	–––
दशम भाव			धनु	06:25:12	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	राहु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:34:01

लग्न–चलित

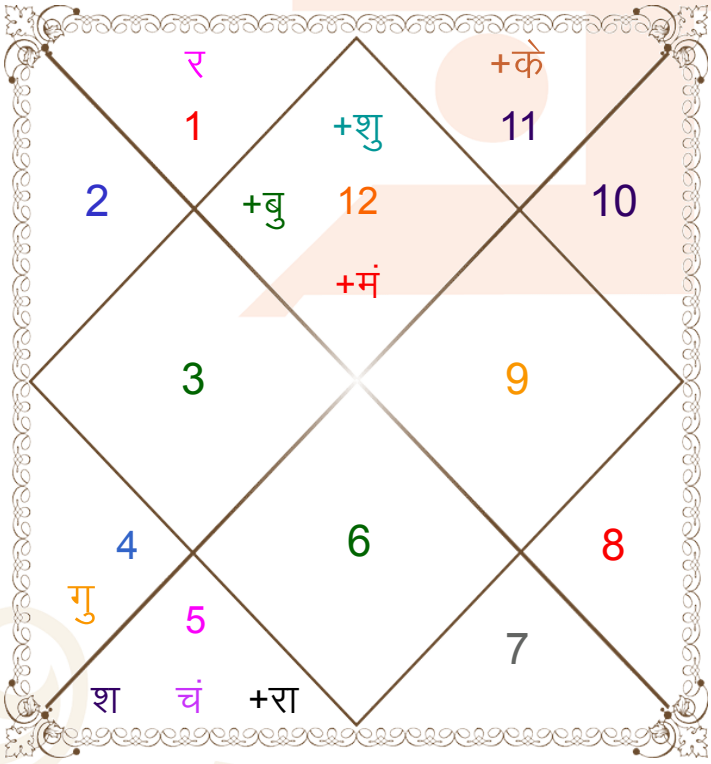

चन्द्र कुंडली

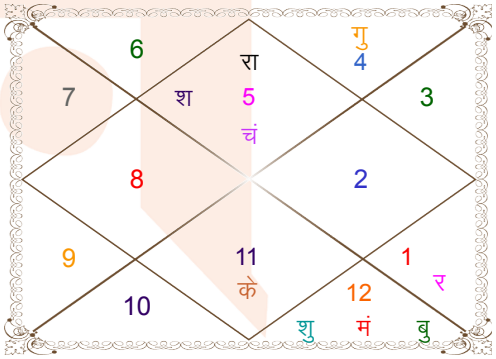

नवमांश कुंडली

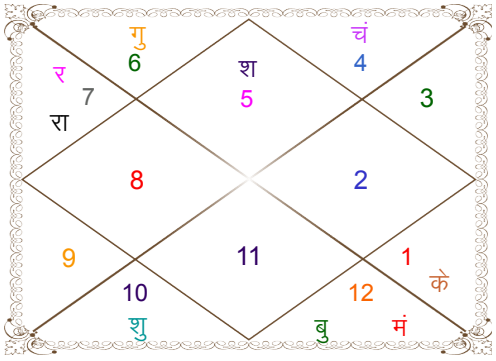

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	21:24:56	मीन	06:24:53
2	मीन	21:24:56	मेष	06:25:00
3	मेष	21:25:03	वृषभ	06:25:06
4	वृषभ	21:25:09	मिथुन	06:25:12
5	मिथुन	21:25:09	कर्क	06:25:06
6	कर्क	21:25:03	सिंह	06:25:00
7	सिंह	21:24:56	कन्या	06:24:53
8	कन्या	21:24:56	तुला	06:25:00
9	तुला	21:25:03	वृश्चिक	06:25:06
10	वृश्चिक	21:25:09	धनु	06:25:12
11	धनु	21:25:09	मकर	06:25:06
12	मकर	21:25:03	कुम्भ	06:25:00

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	06:24:53
2	मेष	11:49:39
3	वृषभ	10:55:18
4	मिथुन	06:25:12
5	कर्क	01:55:03
6	सिंह	01:00:26
7	कन्या	06:24:53
8	तुला	11:49:39
9	वृश्चिक	10:55:18
10	धनु	06:25:12
11	मकर	01:55:03
12	कुम्भ	01:00:26

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

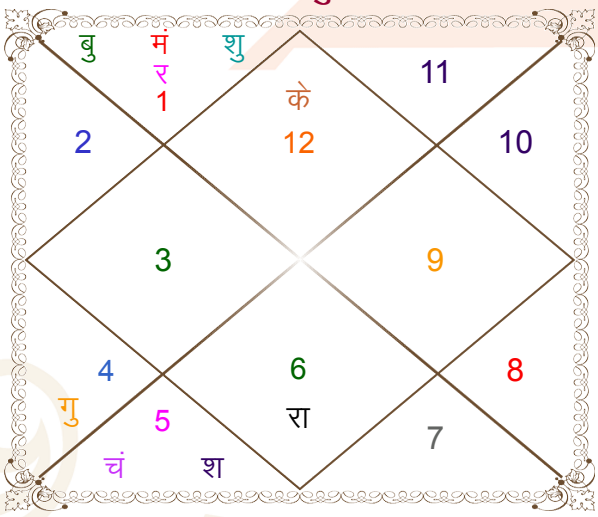

भाव कुंडली

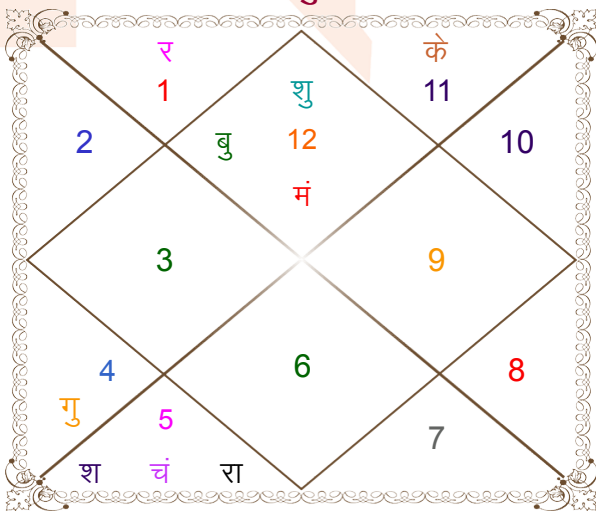

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	वृद्ध	दीप्त	आगमन	28.12	35 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार	मुदित	निद्रा	4.14	53 %
मंगळ	आत्मा	भ्रातृ	बाल	मुदित	शयन	3.31	53 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	बाल	भीत	प्रकाश	0.19	46 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	दीप्त	प्रकाश	20.66	69 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	कुमार	दीप्त	नृत्यलिप्सा	23.31	74 %
शनि	पुत्र	आयुष्य	युवा	खल	गमन	1.26	54 %
राहु	———	ज्ञान	वृद्ध	खल	आगम	0.00	94 %
केतु	———	मोक्ष	वृद्ध	खल	सभा	0.00	94 %
एकुण						**80.99**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

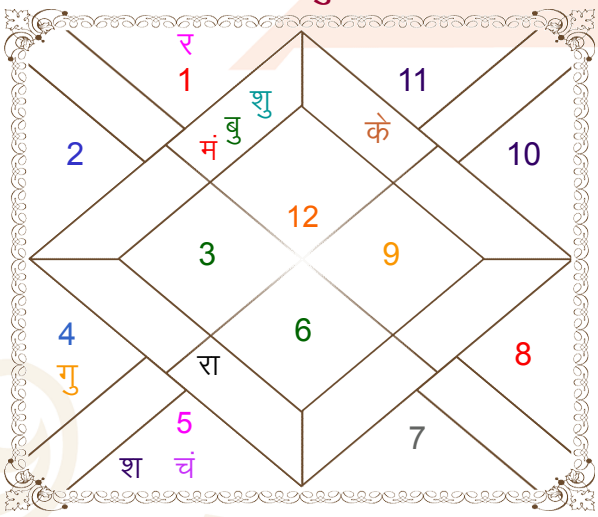

लग्न–चलित

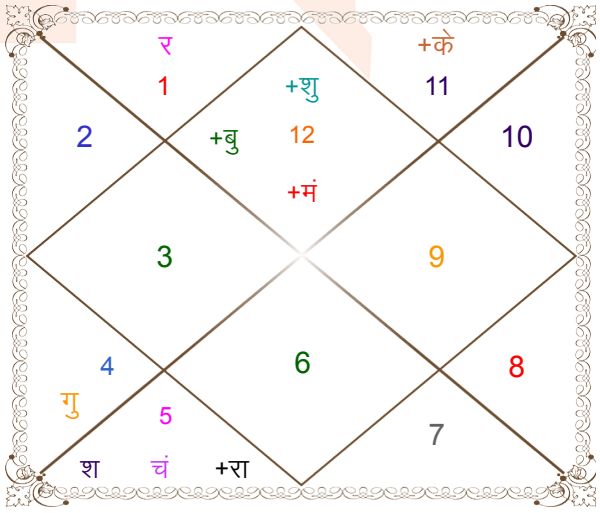

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : केतु 1 वर्ष 7 महिना 28 दिवस

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष	
06/05/1979		01/01/1981		01/01/2001		02/01/2007		01/01/2017	
01/01/1981		01/01/2001		02/01/2007		01/01/2017		02/01/2024	
	00/00/0000	शुक्र	03/05/1984	सूर्य	21/04/2001	चंद्र	02/11/2007	मंगळ	30/05/2017
	00/00/0000	सूर्य	03/05/1985	चंद्र	21/10/2001	मंगळ	02/06/2008	राहु	18/06/2018
	00/00/0000	चंद्र	02/01/1987	मंगळ	25/02/2002	राहु	02/12/2009	गुरु	25/05/2019
	00/00/0000	मंगळ	03/03/1988	राहु	20/01/2003	गुरु	03/04/2011	शनि	03/07/2020
	00/00/0000	राहु	04/03/1991	गुरु	08/11/2003	शनि	01/11/2012	बुध	30/06/2021
	00/00/0000	गुरु	02/11/1993	शनि	20/10/2004	बुध	03/04/2014	केतु	26/11/2021
	06/05/1979	शनि	01/01/1997	बुध	27/08/2005	केतु	02/11/2014	शुक्र	26/01/2023
शनि	05/01/1980	बुध	02/11/1999	केतु	02/01/2006	शुक्र	03/07/2016	सूर्य	03/06/2023
बुध	01/01/1981	केतु	01/01/2001	शुक्र	02/01/2007	सूर्य	01/01/2017	चंद्र	02/01/2024

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
02/01/2024		02/01/2042		02/01/2058		01/01/2077		02/01/2094	
02/01/2042		02/01/2058		01/01/2077		02/01/2094		00/00/0000	
राहु	14/09/2026	गुरु	20/02/2044	शनि	04/01/2061	बुध	31/05/2079	केतु	31/05/2094
गुरु	07/02/2029	शनि	02/09/2046	बुध	14/09/2063	केतु	27/05/2080	शुक्र	31/07/2095
शनि	15/12/2031	बुध	08/12/2048	केतु	23/10/2064	शुक्र	28/03/2083	सूर्य	06/12/2095
बुध	03/07/2034	केतु	14/11/2049	शुक्र	24/12/2067	सूर्य	01/02/2084	चंद्र	06/07/2096
केतु	22/07/2035	शुक्र	15/07/2052	सूर्य	05/12/2068	चंद्र	03/07/2085	मंगळ	02/12/2096
शुक्र	21/07/2038	सूर्य	03/05/2053	चंद्र	06/07/2070	मंगळ	30/06/2086	राहु	20/12/2097
सूर्य	15/06/2039	चंद्र	02/09/2054	मंगळ	15/08/2071	राहु	17/01/2089	गुरु	26/11/2098
चंद्र	14/12/2040	मंगळ	09/08/2055	राहु	21/06/2074	गुरु	24/04/2091	शनि	06/05/2099
मंगळ	02/01/2042	राहु	02/01/2058	गुरु	01/01/2077	शनि	02/01/2094		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल केतु 1 वर्ष 7 मा 27 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
02/01/2024		14/09/2026		07/02/2029		15/12/2031		03/07/2034	
14/09/2026		07/02/2029		15/12/2031		03/07/2034		22/07/2035	
राहु	29/05/2024	गुरु	09/01/2027	शनि	22/07/2029	बुध	25/04/2032	केतु	26/07/2034
गुरु	07/10/2024	शनि	28/05/2027	बुध	16/12/2029	केतु	18/06/2032	शुक्र	27/09/2034
शनि	13/03/2025	बुध	29/09/2027	केतु	15/02/2030	शुक्र	20/11/2032	सूर्य	17/10/2034
बुध	30/07/2025	केतु	19/11/2027	शुक्र	07/08/2030	सूर्य	06/01/2033	चंद्र	18/11/2034
केतु	26/09/2025	शुक्र	13/04/2028	सूर्य	28/09/2030	चंद्र	24/03/2033	मंगळ	10/12/2034
शुक्र	09/03/2026	सूर्य	27/05/2028	चंद्र	24/12/2030	मंगळ	18/05/2033	राहु	06/02/2035
सूर्य	28/04/2026	चंद्र	08/08/2028	मंगळ	23/02/2031	राहु	05/10/2033	गुरु	29/03/2035
चंद्र	19/07/2026	मंगळ	28/09/2028	राहु	29/07/2031	गुरु	06/02/2034	शनि	28/05/2035
मंगळ	14/09/2026	राहु	07/02/2029	गुरु	15/12/2031	शनि	03/07/2034	बुध	22/07/2035

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु	
22/07/2035		21/07/2038		15/06/2039		14/12/2040		02/01/2042	
21/07/2038		15/06/2039		14/12/2040		02/01/2042		20/02/2044	
शुक्र	20/01/2036	सूर्य	07/08/2038	चंद्र	31/07/2039	मंगळ	05/01/2041	गुरु	15/04/2042
सूर्य	15/03/2036	चंद्र	03/09/2038	मंगळ	01/09/2039	राहु	04/03/2041	शनि	17/08/2042
चंद्र	14/06/2036	मंगळ	22/09/2038	राहु	22/11/2039	गुरु	24/04/2041	बुध	05/12/2042
मंगळ	17/08/2036	राहु	11/11/2038	गुरु	03/02/2040	शनि	24/06/2041	केतु	20/01/2043
राहु	29/01/2037	गुरु	25/12/2038	शनि	30/04/2040	बुध	17/08/2041	शुक्र	30/05/2043
गुरु	24/06/2037	शनि	15/02/2039	बुध	16/07/2040	केतु	09/09/2041	सूर्य	07/07/2043
शनि	14/12/2037	बुध	02/04/2039	केतु	17/08/2040	शुक्र	11/11/2041	चंद्र	10/09/2043
बुध	19/05/2038	केतु	21/04/2039	शुक्र	17/11/2040	सूर्य	01/12/2041	मंगळ	26/10/2043
केतु	21/07/2038	शुक्र	15/06/2039	सूर्य	14/12/2040	चंद्र	02/01/2042	राहु	20/02/2044

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
20/02/2044		02/09/2046		08/12/2048		14/11/2049		15/07/2052	
02/09/2046		08/12/2048		14/11/2049		15/07/2052		03/05/2053	
शनि	15/07/2044	बुध	28/12/2046	केतु	28/12/2048	शुक्र	25/04/2050	सूर्य	29/07/2052
बुध	23/11/2044	केतु	15/02/2047	शुक्र	23/02/2049	सूर्य	13/06/2050	चंद्र	23/08/2052
केतु	16/01/2045	शुक्र	03/07/2047	सूर्य	12/03/2049	चंद्र	02/09/2050	मंगळ	09/09/2052
शुक्र	20/06/2045	सूर्य	13/08/2047	चंद्र	09/04/2049	मंगळ	29/10/2050	राहु	23/10/2052
सूर्य	05/08/2045	चंद्र	21/10/2047	मंगळ	29/04/2049	राहु	24/03/2051	गुरु	01/12/2052
चंद्र	21/10/2045	मंगळ	08/12/2047	राहु	19/06/2049	गुरु	01/08/2051	शनि	16/01/2053
मंगळ	14/12/2045	राहु	10/04/2048	गुरु	04/08/2049	शनि	02/01/2052	बुध	26/02/2053
राहु	02/05/2046	गुरु	30/07/2048	शनि	27/09/2049	बुध	19/05/2052	केतु	15/03/2053
गुरु	02/09/2046	शनि	08/12/2048	बुध	14/11/2049	केतु	15/07/2052	शुक्र	03/05/2053

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
03/05/2053		02/09/2054		09/08/2055		02/01/2058		04/01/2061	
02/09/2054		09/08/2055		02/01/2058		04/01/2061		14/09/2063	
चंद्र	13/06/2053	मंगळ	22/09/2054	राहु	18/12/2055	शनि	25/06/2058	बुध	24/05/2061
मंगळ	11/07/2053	राहु	12/11/2054	गुरु	13/04/2056	बुध	27/11/2058	केतु	20/07/2061
राहु	22/09/2053	गुरु	28/12/2054	शनि	30/08/2056	केतु	30/01/2059	शुक्र	31/12/2061
गुरु	26/11/2053	शनि	20/02/2055	बुध	01/01/2057	शुक्र	01/08/2059	सूर्य	18/02/2062
शनि	11/02/2054	बुध	09/04/2055	केतु	21/02/2057	सूर्य	25/09/2059	चंद्र	11/05/2062
बुध	21/04/2054	केतु	29/04/2055	शुक्र	18/07/2057	चंद्र	26/12/2059	मंगळ	07/07/2062
केतु	20/05/2054	शुक्र	25/06/2055	सूर्य	30/08/2057	मंगळ	28/02/2060	राहु	02/12/2062
शुक्र	09/08/2054	सूर्य	12/07/2055	चंद्र	11/11/2057	राहु	11/08/2060	गुरु	12/04/2063
सूर्य	02/09/2054	चंद्र	09/08/2055	मंगळ	02/01/2058	गुरु	04/01/2061	शनि	14/09/2063

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगळ	
14/09/2063		23/10/2064		24/12/2067		05/12/2068		06/07/2070	
23/10/2064		24/12/2067		05/12/2068		06/07/2070		15/08/2071	
केतु	08/10/2063	शुक्र	04/05/2065	सूर्य	10/01/2068	चंद्र	22/01/2069	मंगळ	30/07/2070
शुक्र	15/12/2063	सूर्य	01/07/2065	चंद्र	08/02/2068	मंगळ	25/02/2069	राहु	29/09/2070
सूर्य	04/01/2064	चंद्र	05/10/2065	मंगळ	28/02/2068	राहु	23/05/2069	गुरु	22/11/2070
चंद्र	07/02/2064	मंगळ	12/12/2065	राहु	20/04/2068	गुरु	08/08/2069	शनि	25/01/2071
मंगळ	01/03/2064	राहु	03/06/2066	गुरु	06/06/2068	शनि	07/11/2069	बुध	23/03/2071
राहु	01/05/2064	गुरु	04/11/2066	शनि	31/07/2068	बुध	28/01/2070	केतु	16/04/2071
गुरु	24/06/2064	शनि	07/05/2067	बुध	18/09/2068	केतु	03/03/2070	शुक्र	22/06/2071
शनि	27/08/2064	बुध	17/10/2067	केतु	08/10/2068	शुक्र	07/06/2070	सूर्य	12/07/2071
बुध	23/10/2064	केतु	24/12/2067	शुक्र	05/12/2068	सूर्य	06/07/2070	चंद्र	15/08/2071

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
15/08/2071		21/06/2074		01/01/2077		31/05/2079		27/05/2080	
21/06/2074		01/01/2077		31/05/2079		27/05/2080		28/03/2083	
राहु	18/01/2072	गुरु	22/10/2074	बुध	06/05/2077	केतु	21/06/2079	शुक्र	16/11/2080
गुरु	05/06/2072	शनि	18/03/2075	केतु	26/06/2077	शुक्र	20/08/2079	सूर्य	06/01/2081
शनि	17/11/2072	बुध	27/07/2075	शुक्र	20/11/2077	सूर्य	08/09/2079	चंद्र	03/04/2081
बुध	13/04/2073	केतु	19/09/2075	सूर्य	03/01/2078	चंद्र	08/10/2079	मंगळ	02/06/2081
केतु	13/06/2073	शुक्र	20/02/2076	चंद्र	17/03/2078	मंगळ	29/10/2079	राहु	04/11/2081
शुक्र	03/12/2073	सूर्य	06/04/2076	मंगळ	07/05/2078	राहु	22/12/2079	गुरु	22/03/2082
सूर्य	25/01/2074	चंद्र	23/06/2076	राहु	16/09/2078	गुरु	08/02/2080	शनि	02/09/2082
चंद्र	21/04/2074	मंगळ	16/08/2076	गुरु	12/01/2079	शनि	06/04/2080	बुध	27/01/2083
मंगळ	21/06/2074	राहु	01/01/2077	शनि	31/05/2079	बुध	27/05/2080	केतु	28/03/2083

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	6
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 1
शत्रु अंक	7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिवस	सोम, मंगळ, गुरू
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगळ, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पुष्कराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	पोवले
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीला पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पोवले	मंगळ	100%	स्वास्थ्य, धन, भाग्योदय
पुष्कराज	गुरु	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	62%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	58%	स्वास्थ्य, सुख, दम्पति
माणिक्य	सूर्य	50%	धन, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	34%	शत्रु व रोग, धन हानि
हीरा	शुक्र	28%	रोग, पराक्रम हानि, दुर्घटना
नीलम	शनि	9%	शत्रु व रोग, हानि, व्यय
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, शत्रु व रोग

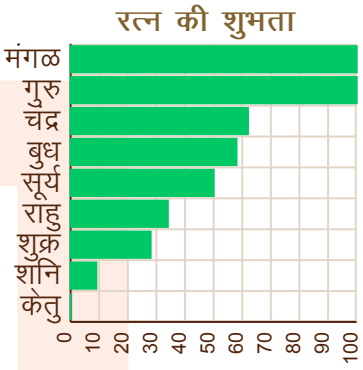

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	01/01/1981	25%	50%	100%	58%	100%	41%	0%	9%	22%
शुक्र	01/01/2001	25%	50%	100%	64%	100%	52%	22%	47%	9%
सूर्य	02/01/2007	62%	69%	100%	58%	100%	3%	0%	9%	0%
चंद्र	01/01/2017	56%	75%	100%	64%	100%	28%	9%	9%	0%
मंगळ	02/01/2024	56%	69%	100%	41%	100%	28%	9%	9%	9%
राहु	02/01/2042	25%	50%	88%	58%	100%	41%	22%	55%	0%
गुरु	02/01/2058	56%	69%	100%	41%	100%	3%	9%	34%	0%
शनि	01/01/2077	25%	50%	88%	64%	100%	41%	34%	47%	0%
बुध	02/01/2094	56%	50%	100%	70%	100%	41%	9%	34%	0%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षे मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	06/05/1979-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
चतुर्थस्थान चरण	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
अष्टमस्थान चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थस्थान चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
अष्टमस्थान चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थस्थान चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
अष्टमस्थान चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	सम	शत्रु से कष्ट
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	दम्पति
चतुर्थस्थान चरण	सम	बदनामी
अष्टमस्थान चरण	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	सन्तति कष्ट

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडली मधे मंगळ लग्नात स्थित आहे, अतः आपण एक मांगळिक पुरूष आहात मंगळ प्रभाव पासून तुमचा स्वास्थ सामान्य बरा होणार. पण कधीं–मधीं, पित्त, किंवा वढ़त पासून काही त्रास होउ सकतो, पण यांचा दुष्प्रभाव नाय होणार. तुमचा स्वभाव तेजस्वी रहणार तसेच स्वतः परिश्रम करून संसार चा महत्व पूर्ण कार्य संपन्न करणारे मंगळ प्रभावातून तुमचे विवाह मधे काही उशीर होऊ सकतात तसेच विवाह संबन्धातील कोणी वार्ता असफल होउ सकतात पण विवाह अवश्य होणार तसेच विवाह नंतर तुमची बायको चा स्वास्थ्य पण अनुकूल रहणार आणि. सुखी दाम्पत्य जीवन वर कोणी पण प्रभाव नाय होणार. तुमची कुंडली मधे प्रथम भावात मंगळ ची चतुर्थ भाव वर दृष्टि होण्या मुळे, जीवनात सुखां साधन काही परिश्रमा नंतर मिळेल. जमीन–वाहन पासून सुखी रहणारे सप्तम भाव वर पूर्ण दृष्टि पासून बायको चा स्वास्थ्य सामान्य रहणार आणि दोन्हीं चे परस्पर संबन्ध मधुर रहणार. मंगळ ची दृष्टी अष्टम भाव वर होण्या मुळे सांसारिक कार्य मधे अडचणे येणारी. पण यांचा प्रभाव सामान्य होणार, अतः मंगल चा प्रभाव बृद्धि तसेच कुप्रभाव कमी कराय साठी तुम्हाला मांगळिक कन्या पासून विाह करायला पाहिजे. असा क न मांगळिक दोष परस्पर भंग होउ सकतो. ह्या साठी कन्या ची कुण्डली मधे प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश भाव मधे शनि राहु किंवा पापी ग्रह ची स्थिति होणार पाहिजे यद्यपि ह्या प्रकारी मांगळिक दोष भंग होण्या नंतर विवाह करणारे तर तुमचा शारीरिक स्वास्थ्य बरा होणार आणि सर्व सुखा चा साधन प्राप्त होणार. अतः धन यश युद्ध सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करणारे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। फलस्वरूप जातक प्रेम प्रसंग में असफल रहता है। प्रियपात्र एवं स्त्री का विरह सहन करना पड़ता है। पत्नी मनोनुकूल नहीं मिलती है। परिणामस्वरूप वैवाहिक जीवन दुःखमय व्यतीत होता है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करता रहता है। जातक चाहे कितना ही इलाज करा ले, पर रोग प्रायः ठीक नहीं होता है। इसमें अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। अर्थात् आर्थिक संकट जातक को घेर लेता है।

इस योग के कारण जातक यात्रा बहुत करता पर उसमें सफलता नहीं मिलती है। मन में निराशा की भावना जागृत हो उठती है एवं जातक अपने मन में शत्रुता भी पालकर रखने वाला होता है और जातक के अनेक शत्रु भी होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं, जिसमें शत्रुओं को ही सफलता मिलती है। परिणामस्वरूप जातक को नुकसान मिलता है और कभी कारावास की सजा भी भोगना पड़ती है। जातक का आत्मबल कमजोर रहता है और चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है।

इसके प्रभाव से जातक का चरित्र संदेहास्पद हो जाता है। धर्म की हानि होती है। जीवन पर्यन्त दुःख, शोक आदि से घिरा रहता है। जातक समय-समय पर बुरा स्वप्न भी देखता है। वृद्धावस्था कष्टप्रद होती है।

इस योग के प्रभावित व्यक्ति को कदापि थलसेना में नहीं जाना चाहिए। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और जातक एक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत करने वाला तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000(अट्ठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।

7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय
विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।
10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के है। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते है। आपके चहरे पर एक तेज होता हैं। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते है। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप

महत्वकांशी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ो की बातों पर अमल करते है। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यो में आपको दक्षता प्राप्त हैं। साथ ही आपने दृढ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यो को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ट भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता हैं। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते है। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्टेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ट भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपतिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता हैं।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता हैं। मगर इन संघर्षों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा हैं।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते है, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते है। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन

भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 6, 7, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म मीन लग्नी झाला आहे, त्यामुळे शारीरिकघ्ष्ट्या निरोगी असाल. वृत्ती सरळ असेल तसेच समानतेची भावना असेल. चेहऱ्यावर सौम्यपणा असेल. विद्वान व्यक्ती असाल आणि नवे विचार सृजन कराल. त्यात तुम्हाला यश व सन्मान प्राप्त होईल. तुमच्या विचारांचा इतरांवर शीर्घ परिणाम होईल आणि ते प्रभावित होतील. त्यातून समाजामध्ये मान प्रतिष्ठा प्राप्त होईल. साहित्य तसेच संगीताचे आकर्षण असेल तसेच या क्षेत्रांमध्ये यशस्वीही होऊ शकाल. वृत्ती भोगी असेल आणि सांसारिक सुखांचा उपभोग घ्याल आणि भौतिक सुखसाधनेही असतील. स्वार्थासाठी दुसऱ्यावर अन्याय न करणे किंवा आपल्या अधिकाराचा दुरूपयोग न करणे ही आपले वैशिष्ट्य आहे. तुम्हाला संताप लगेच येत नाही पण आला तर लवकर शांतही होत नाही. धनप्राप्तीसाठी अनेक कार्य कराल आणि त्यातून लाभही होईल, त्यामुळे धनऐश्वर्यसंपन्न असाल. अत्यंत चिंतन व मननशील व्यक्ती आहात आणि आपला बहुतांशी वेळ त्यातच जाईल.

नैसर्गिक सौंदर्याचे तीव्र आकर्षण असेल आणि त्यातून तुम्ही प्रसन्न असाल. दीनदुबळ्यांबद्दल मनामध्ये सन्मान व सहानुभूतीची भावना असेल. तुमचे प्रेमसुद्धा सरळ व भावुक असेल. स्त्रियांचे आकर्षण असेल. त्यांच्याकडून तुम्ही पराजित व्हाल आणि त्यांचे अनुसरण कराल. तर्कशक्ती प्रबळ असल्याने सर्व लोक तुमच्या तर्काशी सहमत असतील. ब्रह्मांडाबद्दल जिज्ञासा असेल तसेच अध्यात्माचाही सन्मान कराल आणि या क्षेत्रामध्ये विशेष यश मिळवू शकाल. काळानुसार भौतिकवादाचेही आकर्षण असेल व सुखोपभोग घ्याल. मित्र व नातेवाईकांशी संबंध चांगले असतील आणि आपल्याकडून त्यांना पूर्ण सुख व मदत कराल. व्यवहारकुशल व्यक्ती असाल. भोजन कमी असेल. मानसिक चांचल्य असेल आणि अनेक नवीन वस्तूंचे उत्पादन करू शकाल. स्वप्नद्रष्टा, प्रेमी, कवि, विचारवंत, मनस्वी असल्याने जीवनाचा आनंद घ्याल. यथोक्तम–

दक्षोळल्पमक्षोळल्पनोभवश्च सद्रत्नहेमा चपलोळर्तिधूर्तः।
स्यात्रा च नानारच्नाविधाने मीनाभिधाने जनने विलग्ने।।

– जातकाभरणम

म्हणजे ज्याचा जन्म मीन लग्नामध्ये झाला आहे तो कुशल, अल्पहारी, कामवासनासक्त, रत्न ध सुवर्णादियुक्त, चंचल, धूर्त व अनेक वस्तूंचा निर्माता असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे कुटुंबाशी आपले भावनिक नाते असेल आणि त्याची पूर्ण काळजी घ्याल. कुटुंबाच्या सुखासाठी संसाधने प्राप्त कराल. पण कधी कधी व्यक्तिगत इच्छेला कौटुंबिक सुखापेक्षा श्रेष्ठ मानून ती इच्छा प्रथम पूर्ण कराल. घराचे सौंदर्य व आकर्षकते बाबतीत सजग असाल. आकर्षक व्यक्तिमत्व असेल आणि मित्रसुद्धा गुणी व शिक्षित असतील.

विभिन्न स्वाद आवडतात. मिष्ठान्न व चटपटीत स्वाद विशेष आवडतील. सामान्यतः सुंदर, स्वादिष्ट व पौष्टिक भोजन आवडते. धनलालसा राहील. आभूषणे संग्रह कराल. वाणीमध्ये ओजस्विता राहील पण माधुर्य कमी असेल. घरामध्ये धार्मिक कार्य होत राहील. कोणताही उत्सव किंवा आयोजन हातचे सोडणार नाही. नीतिज्ञाता असाल आणि घर, वाहन व संततीयुक्त जीवन जगाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान असेल व कुटुंबाचे पालनपोषण चांगले करेल पण सहनशक्ती तिच्यामध्ये कमी असेल. आनंदी जीवन जगणे तिला आवडते. तिला सहजपणे कुणी प्रभावित करू शकत नाही. घराला सुंदर व आकर्षक बनवण्यात तिला रूची असेल.

चांगले घर असेल. घराला स्वच्छ, सुसज्ज ठेवाल. आधुनिक भौतिक साधने असतील. मनोरंजनाची साधनेसुद्धा असतील. कौटुंबिक जीवन सुखी असेल आणि घरामध्येच आपल्याला शांती मिळेल.

वाहनसुख मिळेल. उत्तम वाहन असेल. पैतृक संपत्ती प्राप्त होईल. प्रतिभावान असाल आणि उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. व्यावहारिकसुद्धा असाल. ज्योतिष, तंत्र, मंत्र व इतर गुप्त विद्यांचे ज्ञान घ्याल. चांगले ज्योतिषीसुद्धा होऊ शकाल. प्रभावी वक्तेसुद्धा बनू शकाल. उन्हाळ्यामध्ये जलक्रीडा, जंगलात भ्रमण करायला आवडते. सुगंधी द्रव्ये आवडतात.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे तुम्ही बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि आयुष्यात आनंदी परिवर्तन घडवण्यासाठी सतत प्रयत्नशील असाल. कल्पनाशक्ती प्रबळ असेल. तुमच्या घ्ष्टीने शृंगाराशिवाय जीवन नीरस आहे. आपल्या सुखी कौटुंबिक जीवनामुळे प्रसन्न व संतुष्ट असाल. विवाहानंतर तुम्ही स्थिरस्थावर व्हाल व पत्नीला नेहमी प्रसन्न व संतुष्ट ठेवण्याचा प्रयत्न कराल.

संतती असेल आणि त्यांचे पालनपोषण व शिक्षणाची व्यवस्था कराल. आपल्यापरीने मुलांना सर्वप्रकारच्या भौतिक सुविधा देण्याचा प्रयत्न कराल. कधी कधी व्यक्तिगत इच्छा बाजूला ठेवून त्यांच्या इच्छेचा मान राखाल. संतती आज्ञाधारक, कर्तव्यपरायण, विश्वासू असेल. तीसुद्धा बुद्धिमान व धनवान असेल व आयुष्यात स्वतंत्र कर्तृत्व सिद्ध करतील. आधुनिक विचारांबरोबरच सनातन रीतिरिवाजांचेसुद्धा पालन करतील. वैदिक ज्ञान व ज्योतिषावर श्रद्धा असेल. आपल्या प्रसिद्ध वडिलांना संतुष्ट ठेवून मंदिर किंवा धर्मशाळा उभी करून प्रसिद्धी मिळवाल व संपन्न व वैभवशाली जीवन जगाल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये बुधाची कन्या राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, बुद्धिमान, शिक्षित व आकर्षक व्यक्तिमत्वाची असेल आणि आपल्याला आयुष्यभर पूर्ण सुख व सहयोग देईल. आपले दाम्पत्य जीवन सुखी असेल. तुम्ही स्वतंत्र प्रवृत्तीची व्यक्ती आहात, पण राशीप्रभावामुळे कधी कधी आपल्या जीवनसाथी किंवा भागीदारावर शंका घ्याल. परंतु, शक्यतो अशी वेळ येऊ देऊ नका, कारण त्यातून अप्रिय स्थिती निर्माण होऊ शकते. कुटुंबामध्ये शांती व समृद्धि राखण्यासाठी नेहमी प्रामाणिक प्रयत्न कराल. घर पूर्णपणे आधुनिक सजावटीने सज्ज ठेवाल. कन्या तसेच कर्क लग्नामध्ये उत्पन्न जातकाशी व्यापारात भागीदारी, मैत्री तसेच विवाहसंबंध चांगले असतील.

व्यवसायात दक्ष असाल आणि धन व अधिकारप्राप्त असाल. वृद्धावस्थेसाठी धनसंग्रह कराल. तुम्हाला लेखा विभाग, बॅंक, सिनेमा, ज्योतिष, तंत्र–मंत्र या क्षेत्रांमध्ये उपजीविकेचे साधन मिळू शकते. त्याचबरोबर द्रव्यासंबंधी कार्य, औषधे किंवा शिक्षण विभागात काम मिळू शकते. वरील क्षेत्रात काम केल्यास निश्चित मान सन्मान, प्रसिद्धी व धनवैभव मिळेल. पत्नी सुंदर, अल्पसंततीवान, सौभाग्यशाली, गृहकृत्यदक्ष, मधुर व सत्यवादी, घ्ढनिश्चयी व तुमची नेहमी प्रिय असेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदिती होती. याचा प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य चांगले असेल तसेच मानसिकघ्ष्ट्या संतुष्ट व प्रसन्न असतील. ते साहसी, निर्भीड व सक्रीय असतील आणि खूप विचार करूनच कोणतेही काम पूर्ण करतील. स्वभावाने उदार व दयाळू असतील आणि समाजासाठी परोपकारी कार्य करतील, त्यातून समाज त्यांना सन्मान व प्रसिद्धी देईल.

तुम्ही लेखा, बॅक संबंधित कार्यातून अपेक्षित प्रगती व यश प्राप्त करू शकाल. त्याचबरोबर संगीत, सिनेमा, तंत्र–मंत्र किंवा ज्योतिषाच्या माध्यमातूनही प्रसिद्धी मिळवू शकाल. सरकारी किंवा गैरसरकारी उद्योगांमध्ये नियंत्रक, व्यवस्थापक, निर्देशक, अध्यक्ष अशा उच्च पदावर विराजमान होऊ शकाल. त्याचबरोबर द्रव्य, रासायनिक औषधी विज्ञान तसेच शिक्षण विभागातूनही उचित पद व सन्मान प्राप्त कराल व या क्षेत्रातून भरपूर लाभ होईल. सरकारकडून वेळोवेळी लाभ होईल. कोर्टकचेरी प्रकरणे शक्यतो टाळावीत कारण यातून लाभापेक्षा हानी जास्त होईल. आपण लक्षपूर्वक कोणतेही काम करणारे, पूर्ण लाभ अपेक्षित ठेवणारे, परोपकारी, राजस वैभवी, जमीन जायदादचे मालक व समाजामध्ये पूर्ण यश व प्रतिष्ठा प्राप्त कराल.

फलादेश - 2025

गोचरीने यंदा गुरु अकराव्या भावात आहे. म्हणून हे वर्ष सुखाचे असेळ. ह्या काळात भरपूर धनप्राप्ती होईळ व आर्थिक स्थिती सृदृढ़ असेळ. व्यापारात किंवा नोकरीत अपेक्षित सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीची शक्यता आहे. ज्योतिषशास्त्रावरचा तुमचा विश्वास वाढेळ मानसिक संतुष्टि अनुभवाळ. सामाजिक क्षेत्रात प्रतिष्ठा वाढेळ व कीर्ति दूरवर पसरेळ. गोचरफळ व दशाफळ पण चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे जाईळ.

गोचरीने शनी यंदा आठव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने प्रकृती मध्यम असेळ. दैनंदिन कार्ये उत्साहाने सम्पन्न कराळ. पत्नीचे प्रकृती यंदा प्रभावित होईळ. त्यामुळे कौटुंबिक सुखात कमतरता येईळ व संबंधात तणाव निर्माण होईळ. आर्थिकदृष्टया हा काळ सामान्य असेळ. आवश्यकतेनुसार धनप्राप्ती होईळ. संतुष्टी कमीच असेळ. कार्यक्षेत्रात परिश्रम व पराक्रमाने सफळता मिळू शकते.यंदा अन्य गोचर शुभ पण दशा अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. त्याचबरोबर शनीच्या दशेचा प्रभाव असेळ. त्यामुळे नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. डाव्या हाताच्या मधत्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होतीळ. शुभ प्रभाव वाढतीळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्यामुळे हे वर्श तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची शारीरिक व मानसिक प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. कधीकाळी मानसिक अशांती अनुभवाळ. महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिश्रमाने सफळ होतीळ. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात अडचणी येतीळ पण त्यावर समर्थपणे मात कराळ. ह्या काळात पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर परस्पर संबंध पण मध्यम असतीळ. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकार्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क असावे. आर्थिक दृष्टया ह्या काळात अत्यधिक परिश्रमानंतरच धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्चही अधिक होईळ. फळतः हे वर्ष सामान्य असेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर शुभ व दशा मध्यम असेळ. त्यामुळे महत्वाच्या कार्यात परिश्रमाने सफळता मिळेळ. अन्य अडचणी पण उद्भवतीळ. म्हणून शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यारसाठी नियमितपणे राहू–केतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी षष्ठ भावात सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2026

यंदा गुरु गोचरीने बाराल्या भावात आहे. तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. वेळप्रसंगी त्रास संभवतो. आर्थिक स्थिती पण चांगळी नसेळ. खर्च जास्त असतीळ. यंदा चांगल्या वाईट खर्चांमुळे आर्थिक विषमता अनुभवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात अडचणी येतीळ. तरी कष्टाने सफळता मिळेळ. यंदा प्रवासांवर खर्च होईळ व त्रासपण संभवतो. म्हणून प्रवास टाळावे.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ नाही. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रम करावे ळागतीळ. मगच सफळता मिळेळ. म्हणून प्रतिकूळ काळ असल्याने नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत, दानादि कार्य करावे.

यंदा शनी गोचरीने आठव्या भावात आहे. त्यामुळे तुम्हाळा वातजनित रोगांमुळे त्रास संभवतो. त्याचबरोबर मानसिक दृष्टया अस्वस्थता असेळ. ह्या काळात दैनंदिन कार्यात कष्ट व संघर्ष कराव ळागेळ. सफळता पण कमीच मिळेळ. कार्यक्षेत्रात वेळोवेळी अडथळे येतीळ. बुद्धीपूर्वक कार्य सम्पन्न करावे. यंदा दाम्पत्य जीवनात तणावाची शक्यता आहे. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होईळ. बांधव व कुटुंबियांशी तुमचे संबंध चांगळे रहाणार नाहीत. मानसिक तणाव राहीळ. ह्याशिवाय यंदा अन्य गोचर व दशा अनुकूह नाही. त्यामुळे उन्नती मध्ये अडथळे येतीळ. दैनंदिन कार्यात अत्यधिक परिश्रम व संघर्षानंतरच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शनीच्या दशेमुळे अडचणी उद्‌भवतीळ. म्हणून शनीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मध्यल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्याचया प्रभावाने हे वर्ष चांगळे जाणार नाही. ह्या काळात शारीरिक व मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. त्याचबरोबर पत्नीची प्रकृती मध्यम असेळ, परस्पर मतभेदांमुळे तणाव निर्माण होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिभमाने संपन्न होतीळ. त्यानंतरच थोडाफार ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. अधिक खर्चामुळे त्रास संभवतो. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात ह्या काळात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकान्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क रहावे. ह्या काळात सर्व कार्यो बुद्धीपूर्वक संपन्न करावी.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण शुभ नाही. त्यामुळे त्रास संभवतो. धनप्राप्ती मध्ये अडथळे येतीळ. त्यामुळे शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमिपणे राहूकेतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

राहु ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 14/09/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु षष्ठ भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु पंचम भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ नाय रहणार अतः इच्छित परिणाम नाय भेंटणारे. कुटुम्ब मधे आशान्ती रहणारी आणि परस्पर सहयोग नाय भेंटणार आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होणार. व्यापार साठी समय अनुकूल नाय रहणार कधीं–मधीं घाटे पण होऊ सकतो नोकरी मधे पदोन्नति साठी अडचणे उत्पन्न होणारी.

कधीं–मधीं अनावश्यक प्रवास होणारी म्हणून मानसिक त्रास उत्पन्न होणार. समाजातीळ प्रतिष्ठा मधे कमी होणारी. अतः धैर्य बरोबर कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः कार्य क्षमता मधे कमी होणारी. महत्वपूर्ण कार्य मधे अडचणे येणारी व्यापार मधे लाभ नाय होणार तसेच घाटे पण होउ सकतो आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी. कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होउ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार. अविवाहित लोकां चे विवाह मधे अडचणे येणारी मित्र पासून सहयोग नाय भेंटणार समाजातीळ प्रतिष्ठा मधे कमी होणारी शत्रु अडचणे उत्पन्न करणारे अतः धैर्य बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने गुरु ह्यावर्षी प्रथम भावात असेळ. त्यामुळे तुमचे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य चांगळे असेळ व समाजात थोडाफार मान–सन्मान व प्रतिष्ठा मिळेळ. ह्यावर्षी व्यापार किंवा अन्य कार्यक्षेत्रात तुम्ही उन्नती व सफळता मिळवण्यास समर्थ असाळ. अविवाहिंताचे विवाह होण्याची यंदा संभावना आहे. धर्माविषयी तुम्हाळा आदर निर्माण होईळ. प्रयत्नपूर्वक आर्थिक कार्ये सम्पन्न कराळ. ह्यावर्षी तुमच्या मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाढ होईळ. फळतः आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती करण्यात सफळ असाळ. त्यामुळे आर्थिक स्थिती सुदृढ़ होईळ. त्याचबरोबर जुनी अडळेळी कामे पूर्ण करण्यात तुम्हाळा सफळता मिळेळ. तुम्ही स्वतंत्रपणे वागाळ व स्वतःळा अतिशय अनुभवी समजाळ. म्हणून तुमच्याकरता हा काळ महत्वाचा पण विश्रांतीरहित असेळ. ह्याशिवाय अन्य गोचरीची फळे अशुभ असून दशाफळ अनुकूळ असल्याने उपर्युक्त शुभ फळांमध्ये कधीतरी कमतरता जाणवेळ. पण परिश्रम केल्यास तदुपरांत सकारात्मक फळे मिळवण्यात यशस्वी व्हाळ.

गोचरीने शनी यंदा नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. शत्रू व विरोधकांवर विजय मिळवाळ. धार्मिक कार्याविषयी श्रद्धा वाढेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ व वर्षभर धनप्राप्ती होत राहीळ. पण वडिळांची प्रकृती ह्या काळात चांगळी रहाणार नाही. शारीरिकदृष्टया त्यांना त्रास होऊ शकतो. ह्याशिवाय अन्य गोचर ह्या काळात अशुभ असेळ. पण दशाफळ चांगळे असल्याने कधीकाळी अडचणी आल्या तरी काळ चांगळा असेळ.

गोचरीने यंदा राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. हे वर्ष भिभपुळे देईळ. ह्या काळात पराक्रम व प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजात उचित सन्मान मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांवर विजय मिळवाळ. यंदा एखादी प्रतिस्पर्धात्मक परीखा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. धनप्राप्ती होईळ. परंतु प्रकृतीच्या दृष्टीने हा काळा चांगळा नाही. पोटाचे विकार किंवा अपचन, गैस वगैरे मुळे त्रास संभवतो. त्याचबरोबर इच्छावृद्धी मुळे खर्च वाढेळ. अन्य गोचर यंदा चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे कमीअधिक प्रमाणात शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। गुरु पंचम भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहात पण राहु षष्ठ भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार. अतः आपण व्यवहार आणि पराक्रम पासून सफळता प्राप्त करणारे. कविता संगीत वगेरे क्षेत्र मधे सफळता प्राप्त होऊ सकतो व्यापार साठी समय उत्तम रहणार तसेच कोणी नवीन प्रयोजने होउ सकतो. नौकरी मधे पदोन्नति आणि अधिकारयां पासून सहयोग प्राप्त होणार विद्वान आणि विशेष माणूस बरोबर सम्बन्ध स्थापित होणार आणि लाभ प्राप्त होणार. काही तरी प्रवास पासून लाभ होणार आणि नवीन प्रयोजने स्थापित होणार अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावने शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात अनावश्यक चिंता व त्रासापासून मुक्ती मिळेळ. प्रेम–प्रकरणाची शक्यता आहे. त्याचबरोबर मुळांकडून सुख मिळेळ. त्यांची प्रकृती उत्तम असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष अनुकूळ असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. अनायासपणे धनप्राप्तीचे योग आहेत. कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व राजकारणातीळ एरवाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी किंवा उच्चाधिकान्याशी संपर्क स्थापित होईळ. ज्यापासून भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। गुरु पंचम भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहात पण राहु षष्ठ भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः शुभ फळ प्राप्त कराय साठी सफळ होणारे. सांसारिक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करणारे. आणि सफळता भेंटणारी. रचनात्मक कार्य मधे विशेष लाभ होउ सकतो. सामाजिक सम्मान प्रतिष्ठा वृद्धी होणारी तसेच समाज प्रभावित होणार. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती आणि परम्पर सहयोग रहणार समाजातीळ विवाहित लोकां चे संतति लाभ होणार. मित्र सहयोग देणारे शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी अतः असे समया ची सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

ह्यावर्षी गुरु गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत दुसऱ्या भावात आहे. म्हणून त्याच्या शुभ प्रभावाने तुमची आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर प्रमाणात धन व लाभ मिळवाळा. ह्या काळात कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. पण कधी–कधी खर्च वाढल्याने मन उद्वीग्न असेळ. ह्या काळात समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजत एक प्रभाववी व्यक्ती म्हणून मानाचे स्थान मिळेळ. धार्मिक कार्यांची आवड राहीळ. त्याचबरोबर वाणीतीळ ओजस्विता वाढून लोक तुमच्या बोळण्याकडे लक्ष देतीळ. व्यापारात चांगळे योग जुळून येतीळ. त्याचप्रमाणे गोचरीची व दशेची अनुकूळ फळे मिळाल्याने हे वर्ष तुमच्याकरता चांगळे व भाग्याचे संभवते.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त लख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावने शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात अनावश्यक चिंता व त्रासापासून मुक्ती मिळेळ. प्रेम–प्रकरणाची शक्यता आहे. त्याचबरोबर मुळांकडून सुख मिळेळ. त्यांची प्रकृती उत्तम असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष अनुकूळ असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. अनायासपणे धनप्राप्तीचे योग आहेत. कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व राजकारणातीळ एरवाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी किंवा उच्चाधिकान्याशी संपर्क स्थापित होईळ. ज्यापासून भविष्यात लाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

राहु ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर 07/02/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शनि चा अंतर प्रारंभ होणार। गुरु पंचम भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहे। पण शनि षष्ठ भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगड़े सफळता भेंटणारी. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी तसेच धन लाभ होणार आणि मिळकत वृद्धी होणारी. महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होणार समाजातीळ प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी काही तरी प्रवास पासून लाभ होणार आणि भविष्य साठी प्रयोजने सफळ होणारी. मित्र पासून सहयोग भेंटणार आणि कुटुम्ब सुख शान्ती रहणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार, अतः आपण ह्या वेळी सगड़े उन्नति करणारे. व्यापार मधे इच्छित सफळता प्राप्त करणारे आणि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहणारी तसेच मिळकत अर्जित करणारे. जर आपण नौकरी मधे असणारे तर पदोन्नति होउ सकतो आणि

विशेष अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी उत्तम रहणारी आणि परस्पर सहयोग पण भेंटणार. घरगुती समान खरेदी साठी खर्चे करणारे आणि विशिष्ट माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार तसेच वांछित लाभ होणार. अतः असे समय वर प्रयत्न क न शुभ अवसर प्राप्त करावे. मांगळिक उत्सव होणार आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी.